दक्षिण एशिया के प्रति भारत की विदेश नीति में आमूलचूल परिवर्तनः हार्ड पावर से सॉफ्ट पावर तक

प्राप्तिः 25.03.2025
स्वीकृतः 27.04.2025

निकहत उमैरा
असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)
इस्माईल नेशनल महिला
(पी0जी0) कॉलेज, मेरठ (उ.प्र.)
ईमेलः nikhatumaira508@gmail.com

30

प्रस्तावना

भारत की विदेश नीति में दक्षिण एशिया को एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में मान्यता दी गई है। दक्षिण एशिया न केवल भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत की सीमा से जुड़ा है, बल्कि राजनीतिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत की विदेश नीति में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। प्रारंभ में, भारत की विदेश नीति का फोकस मुख्य रूप से हार्ड पावर, यानी सैन्य और राजनीतिक शक्ति पर था, जो सीमावर्ती विवादों और क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों से प्रेरित था। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण, और सॉफ्ट पावर के उदय ने भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तनों को जन्म दिया है।जिससे भारत ने अपने पड़ोसी देषों के साथ संबंधों को सुधारने, क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने, और सांस्कृतिक और आर्थिक सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए अपनी नीति में बदलाव किए हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत की विदेश नीति का आरंभिक दौर मुख्यतः हार्ड पावर पर आधारित था। विभाजन के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ बढ़ते संघर्ष और चीन के साथ सीमा विवादों के कारण अपनी सुरक्षा चिंताओं को प्राथमिकता दी। इस दौर में क्षेत्रीय सुरक्षा को बनाए रखने के लिए भारत ने सैन्य शक्ति और प्रत्यक्ष आर्थिक दबाव के माध्यम से अपने पड़ोसी देशों पर प्रभाव डालने की कोशिश की।

1947–1990 का कालके दौरान भारत की विदेश नीति मुख्य रूप से सैन्य और राजनीतिक शक्ति पर केंद्रित थी। इस काल में भारत ने कई महत्वपूर्ण सैन्य संघर्षों का सामना किया और इन संघर्षों ने उसकी विदेश नीति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।

1948 का युद्धः भारतीय स्वतंत्रता के तुरंत बाद, भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर पर विवाद ने युद्ध का रूप ले लिया। यह संघर्ष जम्मू और कश्मीर के क्षेत्रीय विवाद को लेकर था, और इसे संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता के तहत एक अस्थायी युद्धविराम के साथ समाप्त किया गया।

1962 का युद्धः भारत और चीन के बीच सीमा विवाद ने 1962 में एक सशस्त्र संघर्ष को जन्म दिया। यह युद्ध भारत–चीन सीमा के अरुणाचल प्रदेश और अक्साई चिन क्षेत्रों में हुआ। इस संघर्ष ने भारत की सुरक्षा नीति और सैन्य क्षमताओं में महत्वपूर्ण सुधार की आवश्यकता को उजागर किया।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.30

1965 का युद्धः पाकिस्तान और भारत के बीच 1965 में एक और युद्ध हुआ, जो मुख्यतः कश्मीर के विवादित क्षेत्रों को लेकर था। इस संघर्ष ने दोनों देशों के बीच क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को प्रभावित किया और युद्ध के अंत में एक संघर्षविराम की स्थिति बनी।

1971 का युद्धः भारत ने बांग्लादेश की स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई। पाकिस्तान के पूर्वी हिस्से (अब बांग्लादेश) में संघर्ष के दौरान, भारत ने सैन्य हस्तक्षेप किया, जिससे बांग्लादेश की स्वतंत्रता सुनिश्चित हुई। यह युद्ध भारत की क्षेत्रीय प्रभावशीलता को बढ़ाने के साथ–साथ उसकी अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को भी सुदृढ़ करने में सहायक था।[1]

इस काल में भारत की विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ थीं : सुरक्षा चिंताओं पर आधारित सैन्य रणनीति, पड़ोसी देशों के साथ सीमा विवाद और संघर्षों का समाधान, और क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को बनाए रखने के प्रयास। इन सैन्य संघर्षों ने भारत की सुरक्षा नीतियों और विदेश नीति की दिशा को आकार दिया और उसे भविष्य में सॉफ्ट पावर की ओर कदम बढ़ाने की प्रेरणा दी।[2]

वैश्वीकरण और नई विदेश नीति की दिशाः–

1990 दशक की शुरुआत में वैश्वीकरण और उदारीकरण की प्रक्रिया शुरू होने के साथ ही भारत की विदेश नीति में भी महत्वपूर्ण बदलाव आए। भारत ने क्षेत्रीय संबंधों को मजबूत करने और अपने पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए हार्ड पावर के बजाय सॉफ्ट पावर को प्राथमिकता देनी शुरू की। इसके साथ ही, आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक कूटनीति और विकासशील देशों के लिए तकनीकी सहायता जैसी पहलें भी इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हुईं।[3]

1991 का आर्थिक सुधारः भारत के उदारीकरण के बाद विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति पर जोर दिया गया। इससे दक्षिण एशिया के देशों के साथ भारत का आर्थिक सहयोग और व्यापार संबंध भी बढ़ा।

1990 के दशक की शुरुआत में वैश्वीकरण और उदारीकरण की प्रक्रिया के साथ भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण बदलाव आए। इस काल में भारत ने हार्ड पावर के बजाय सॉफ्ट पावर को प्राथमिकता देना शुरू किया, जिससे क्षेत्रीय संबंधों को सुधारने और पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने पर जोर दिया गया।[4]

उदारीकरण और आर्थिक कूटनीतिके तहत 1991 में भारत ने अपने आर्थिक सुधारों की शुरुआत की, जिसमें व्यापार उदारीकरण, विदेशी निवेश को प्रोत्साहन, और निजीकरण की प्रक्रिया शामिल थी। इस आर्थिक सुधार ने भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख खिलाड़ी बना दिया। आर्थिक सुधारों के साथ, भारत ने दक्षिण एशिया के देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया। इसके तहत, भारत ने दक्षिण एशियाई देशों के साथ व्यापार, निवेश, और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दिया। इस दौरान, भारत ने क्षेत्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न पहल कीं और दक्षिण एशिया में अपने आर्थिक प्रभाव को सुदृढ़ किया।[5]

1990 के दशक की शुरुआत में वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के साथ, भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण बदलाव आए। हार्ड पावर से सॉफ्ट पावर की ओर बढ़ते हुए, भारत ने क्षेत्रीय संबंधों को सुदृढ़ किया और आर्थिक, सांस्कृतिक, और तकनीकी सहयोग पर जोर दिया। इस बदलाव

ने भारत की क्षेत्रीय और वैश्विक भूमिका को नई दिशा दी और क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।6

भारत की सॉफ्ट पावर रणनीति– सॉफ्ट पावर उस प्रभाव का प्रतीक है, जिसके तहत एक देश अपनी सांस्कृतिक, सामाजिक, और कूटनीतिक ताकतों के माध्यम से दूसरे देशों पर प्रभाव डालता है। यह एक ऐसा साधन है जो सैन्य या आर्थिक दबाव के बजाय आपसी विश्वास, संस्कृति और विचारधारा के आधार पर संबंध मजबूत करने का काम करता है। भारत ने दक्षिण एशिया में अपनी विदेश नीति में सॉफ्ट पावर का कुशलता से उपयोग किया है, जिससे इस क्षेत्र में शांति और सहयोग का वातावरण बना है।[7]

संस्कृतिः भारत की प्राचीन और विविधतापूर्ण संस्कृति ने हमेशा से ही वैश्विक स्तर पर एक विशेष स्थान बनाया है। दक्षिण एशियाई देशों में भी भारतीय संस्कृति का गहरा प्रभाव रहा है।

योग और आयुर्वेदः भारत का योग और आयुर्वेद न केवल पश्चिमी देशों में लोकप्रिय हुआ है, बल्कि दक्षिण एशियाई देशों में भी इसे स्वीकृति मिली है। योग दिवस का आयोजन और आयुर्वेद के प्रचार–प्रसार से भारत ने अपने पड़ोसी देशों में एक स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने में मदद की है।

भारतीय सिनेमा (बॉलीवुड): बॉलीवुड फिल्मों ने दक्षिण एशिया में भारत की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया है। हिंदी सिनेमा न केवल भारत में बल्कि पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका जैसे देशों में भी बेहद लोकप्रिय है। सिनेमा के माध्यम से भारत की भाषा, परंपरा और समाज का वैश्विक प्रसार हुआ है।

हिंदी भाषाः दक्षिण एशिया के कई देशों में हिंदी भाषा का प्रभाव है। नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और पाकिस्तान में हिंदी बोलने और समझने वाले लोग बड़ी संख्या में हैं। यह सांस्कृतिक संपर्क को और बढ़ावा देता है और भारत की सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ करता है।

शिक्षा और तकनीकी सहयोगरू एक मजबूत संबंध का आधारः

भारत की सॉफ्ट पावर का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा शिक्षा और तकनीकी सहयोग है। भारतीय विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों ने दक्षिण एशिया के छात्रों के लिए शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र बनने का कार्य किया है।

ITEC (Indian Technical and Economic Cooperation) कार्यक्रमः ITEC कार्यक्रम के तहत भारत ने दक्षिण एशियाई देशों के लिए तकनीकी और आर्थिक सहायता प्रदान की है। इसके माध्यम से विभिन्न विकासशील देशों के सरकारी अधिकारी और कर्मचारी भारत में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इससे भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच आपसी सहयोग और संबंधों में मजबूती आई है।

छात्रवृत्ति कार्यक्रमः भारत ने दक्षिण एशियाई देशों के छात्रों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कई छात्रवृत्ति कार्यक्रम शुरू किए हैं। इससे क्षेत्रीय सहयोग के साथ–साथ सांस्कृतिक और सामाजिक संपर्क भी बढ़ा है, जो दीर्घकालिक रूप से अच्छे संबंधों का आधार है।[8]

समस्याओं का शांतिपूर्ण समाधान

भारत की कूटनीतिक रणनीति और सॉफ्ट पावर ने दक्षिण एशिया में विवादों के शांतिपूर्ण समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.30

बांग्लादेश के साथ सीमा विवाद का समाधान (2015): भारत और बांग्लादेश के बीच दशकों से चल रहे भूमि सीमा विवाद का समाधान 2015 में हुआ, जब दोनों देशों ने 1974 के सुलह समझौते को लागू किया। इसके अंतर्गत, 162 अनसुलझे विवादित क्षेत्रों को समेटते हुए 6.1 किलोमीटर भूमि भारत को मिली और 17.1 किलोमीटर भूमि बांग्लादेश को दी गई। इस समझौते से भारत–बांग्लादेश के रिश्तों में विश्वास और सहयोग को बढ़ावा मिला, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापार और सांस्कृतिक संबंधों को भी मजबूती मिली।

भारत की "पड़ौसी प्रथम" नीतिः

भारत की 'पड़ौसी प्रथम' नीति उसके पड़ोसी देशों के साथ मजबूत, स्थिर और सहयोगपूर्ण संबंध स्थापित करने पर आधारित है। यह नीति भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू है और इसका उद्देश्य न केवल क्षेत्रीय स्थिरता सुनिश्चित करना है बल्कि दक्षिण एशिया में आर्थिक और सामाजिक विकास को भी गति देना है।

उद्देश्य और प्रासंगिकता

'पड़ौसी प्रथम' नीति का प्रमुख उद्देश्य भारत के पड़ोसी देशों के साथ शांति, स्थिरता, और विकास को प्रोत्साहित करना है। इसके तहत भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान करने पर विशेष जोर दिया है।

आर्थिक और तकनीकी सहायताः भारत ने अपने पड़ोसी देशों में कई अवसंरचना परियोजनाओं का समर्थन किया है। उदाहरण के लिए, नेपाल में 900 मेगावाट की 'अरुणजलविद्युत परियोजना', बांग्लादेश के साथ रेलवे और बिजली संपर्क को मजबूत करना, और अफगानिस्तान में ज़रांज–दिलाराम राजमार्ग का निर्माण करना। इन प्रयासों का उद्देश्य पड़ोसी देशों की बुनियादी संरचना और आर्थिक विकास में योगदान देना है।

वित्तीय सहयोगः भारत ने अपने पड़ोसी देशों को रियायती ऋण और वित्तीय सहायता प्रदान की है। उदाहरणस्वरूप, 2020 में श्रीलंका को +400 मिलियन की मुद्रा विनिमय सुविधा प्रदान की गई थी, जिससे उनके आर्थिक संकट में मदद की जा सके।9

सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन)

सार्कभारत की पड़ौसी प्रथम नीति का एक अहम हिस्सा है, जिसके तहत भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ बहु–पक्षीय सहयोग को प्रोत्साहित करता है। सार्कके सदस्य देश भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, भूटान, मालदीव, और अफगानिस्तान हैं। इसका उद्देश्य आपसी व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक विकास के लिए सहयोग को बढ़ावा देना है।

यद्यपि सार्कका उद्देश्य क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है, लेकिन भारत और पाकिस्तान के बीच राजनीतिक तनाव इसके प्रभाव को सीमित कर देते हैं। इसके बावजूद, भारत ने 2014 और 2016 में आयोजित सार्कशिखर सम्मेलनों में कई महत्वपूर्ण पहलों का प्रस्ताव रखा था।

बिमस्टेक (बंगाल की खाड़ी बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग उपक्रम)

बिमस्टेक के सदस्य देश भारत, बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका, थाईलैंड, भूटान, और नेपाल हैं। जिसमें सार्ककी सीमाओं को देखते हुए, भारत ने बिमस्टेकपर अधिक जोर दिया है, जो बंगाल की खाड़ी के आसपास स्थित देशों के साथ सहयोग को बढ़ावा देता है।

बिमस्टेक के जरिए भारत ने क्षेत्रीय सुरक्षा, व्यापार और कनेक्टिविटी को मजबूत करने की दिशा में कार्य किया है। भारत ने 2018 में आयोजित चौथे बिमस्टेकशिखर सम्मेलन में आतंकवाद विरोधी प्रयासों, कनेक्टिविटी परियोजनाओं और ऊर्जा सहयोग को प्राथमिकता दी थी।

क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा

पड़ौसी प्रथम नीति के तहत भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ सुरक्षा सहयोग को भी प्राथमिकता दी है, खासकर आतंकवाद और साइबर सुरक्षा के मुद्दों पर। उदाहरण के तौर पर, 2019 में भारत ने मालदीव को तटीय सुरक्षा उपकरण और निगरानी प्रणाली प्रदान की, जिससे इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा बढ़ाई जा सके।

भारत की पड़ौसी प्रथम नीति उसके पड़ोसी देशों के साथ मजबूत और सहयोगपूर्ण संबंध बनाने की एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके तहत न केवल आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा को भी प्राथमिकता दी जाती है। सार्कऔर बिमस्टेक जैसे संगठन इस नीति के प्रमुख अंग हैं, जिनके माध्यम से भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को मजबूत करता है।[10]

कोविड–19 और वैक्सीन डिप्लोमेसीः

कोविड–19 महामारी के दौरान, भारत ने अपनी सॉफ्ट पावर को बढ़ावा देने के लिए "वैक्सीन मैत्री" कार्यक्रम शुरू किया, जिसके तहत भारत ने दुनिया के कई देशों, विशेषकर दक्षिण एशिया के पड़ोसी देशों, को कोविड–19 के टीके प्रदान किए। यह पहल न केवल स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहायता के रूप में महत्वपूर्ण रही, बल्कि वैश्विक मंच पर भारत की छवि को सुदृढ़ करने के लिए भी महत्वपूर्ण थी।

वैक्सीन मैत्री कार्यक्रम की शुरुआतः

जनवरी 2021 में शुरू हुए "वैक्सीन मैत्री" कार्यक्रम के तहत, भारत ने पड़ोसी देशों और विकासशील देशों को मुफ्त या रियायती दरों पर कोविड–19 टीके प्रदान किए। भारत ने कोविशील्ड (ऑक्सफोर्ड–एस्ट्राजेनेका द्वारा विकसित और भारत में सीरम इंस्टिट्यूट द्वारा निर्मित) और कोवैक्सीन(भारत बायोटेक द्वारा विकसित) जैसे टीकों का वितरण किया।

टीका उत्पादन क्षमताः

भारत ने 2021 में लगभग 2.4 बिलियन खुराकें (डोज़) का उत्पादन किया, जिसमें से बड़ी संख्या में टीके वैश्विक वितरण के लिए उपलब्ध कराए गए। विश्व स्तर पर कोविड–19 टीका उत्पादन में भारत का लगभग 60ः योगदान रहा, जिससे यह दुनिया के सबसे बड़े वैक्सीन उत्पादकों में से एक बन गया।

पड़ोसी देशों को टीका वितरणः

"पड़ौसी प्रथम" नीति के तहत, भारत ने अपने पड़ोसी देशों को प्राथमिकता दी और उन्हें कोविड–19 टीके भेजे। इसके तहत निम्नलिखित आंकड़े महत्वपूर्ण हैंः

- **नेपाल :** नेपाल को जनवरी 2021 में भारत ने 10 लाख खुराकें भेजीं। इसके अलावा, 2021 के अंत तक नेपाल को भारत से लगभग 20 लाख खुराकें प्राप्त हुईं।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.30

- **बांग्लादेशः** भारत ने बांग्लादेश को 70 लाख से अधिक खुराकें भेजीं। यह भारत की सबसे बड़ी वैक्सीन डिलीवरी में से एक थी।
- **भूटानः** भूटान को सबसे पहले भारत से कोविड–19 टीके प्राप्त हुए, जिसमें 1.5 लाख से अधिक खुराकें भेजी गईं।
- **मालदीवः** मालदीव को भी जनवरी 2021 में भारत ने 1 लाख से अधिक खुराकें भेजी थीं।
- **श्रीलंकाः** श्रीलंका को भी भारत ने 5 लाख खुराकें भेजीं।
- **अफगानिस्तानः** भारत ने 5 लाख खुराकें अफगानिस्तान को भी प्रदान कीं।

वैश्विक वैक्सीन डिप्लोमेसी और COVAX पहलः भारत ने न केवल पड़ोसी देशों बल्कि अन्य विकासशील देशों और वैश्विक वैक्सीन वितरण प्रणाली COVAX के तहत भी टीके प्रदान किए।

- कॉवेक्स के माध्यम से टीका वितरण COVAX के तहत भारत ने 70 से अधिक देशों को टीके भेजे, जिनमें अफ्रीकी और लातिन अमेरिकी देश शामिल थे।
- वैश्विक योगदान मार्च 2021 तक, भारत ने 90 से अधिक देशों को लगभग 6.64 करोड़ (66. 4 मिलियन) खुराकें भेजीं, जिनमें से 1.07 करोड़ (10.7 मिलियन) खुराकें मुफ्त में प्रदान की गईं और बाकी व्यावसायिक या COVAX के तहत भेजी गईं।[11]

भारत की सॉफ्ट पावर में नीति में वृद्धि

वैक्सीन मैत्री के माध्यम से भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ किया। भारत की यह पहल खासकर विकासशील और पड़ोसी देशों में काफी सराही गई। वैश्विक महामारी के समय जब कई देशों के पास सीमित संसाधन थे, भारत द्वारा टीके प्रदान करना एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक कदम था।जिसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और संयुक्त राष्ट्र ने भारत के इस योगदान की सराहना की। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भारत को "वैश्विक वैक्सीन प्रयासों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ" कहा।

चुनौतियां और वैक्सीन मैत्री का अस्थायी रुकावट

2021 की दूसरी तिमाही में, भारत में कोविड–19 की दूसरी लहर आई, जिससे भारत को वैक्सीन के घरेलू वितरण पर ध्यान केंद्रित करना पड़ा। इसके कारण वैक्सीन मैत्री कार्यक्रम में अस्थायी रुकावट आई। अप्रैल 2021 में, भारत ने घरेलू मांग को पूरा करने के लिए वैक्सीन के निर्यात पर अस्थायी रोक लगा दी। हालांकि, बाद में, स्थिति स्थिर होने पर इस पहल को पुनः शुरू किया गया।

भारत की "वैक्सीन डिप्लोमेसी" ने न केवल महामारी के समय में देशों की मदद की बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की सकारात्मक छवि को भी मजबूत किया। "वैक्सीन मैत्री" कार्यक्रम ने यह साबित किया कि भारत वैश्विक स्वास्थ्य संकट के समय में न केवल एक प्रमुख वैक्सीन निर्माता बल्कि एक विश्वसनीय सहयोगी भी है। इस पहल ने दक्षिण एशिया के देशों के साथ भारत के संबंधों को और सुदृढ़ किया, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर में वृद्धि हुई।[12]

भारत की हार्ड पावर कूटनीति–

भारत की विदेश नीति में सॉफ्ट पावर के साथ–साथ हार्ड पावर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हार्ड पावर, जिसमें सैन्य और आर्थिक शक्ति शामिल है, का उपयोग भारत ने अपने सुरक्षा

हितों की रक्षा और रणनीतिक चुनौतियों से निपटने के लिए किया है। पाकिस्तान और चीन जैसे देशों के साथ सीमा विवादों और आतंकवाद जैसी चुनौतियों के कारण भारत को अपनी हार्ड पावर नीतियों को बनाए रखना पड़ा है।

चीन की चुनौती

चीन की बढ़ती आर्थिक और सामरिक शक्ति भारत के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय रही है, खासकर 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (BRI) के माध्यम से।

- BRI की चुनौती चीन ने BRI के तहत एशिया, यूरोप और अफ्रीका के विकासशील देशों में बड़े पैमाने पर अवसंरचना परियोजनाओं में निवेश किया है। दक्षिण एशिया में पाकिस्तान के साथ श्चाइना–पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर (CPEC) परियोजना का विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रभाव रहा है, क्योंकि यह परियोजना पाकिस्तान–अधिकृत कश्मीर से गुजरती है, जिस पर भारत का दावा है। भारत को यह डर है कि इससे चीन का सामरिक और भू–राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र में बढ़ेगा।
- भारत की प्रतिक्रिया चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए भारत ने अपनी सैन्य क्षमता में सुधार किया है। 2021 में, भारत का रक्षा बजट +65.9 बिलियन था, जो क्षेत्रीय सुरक्षा में निवेश को दर्शाता है। लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर भारत ने चीन के खिलाफ अपने सैन्य बलों को तैनात किया है।
- सैन्य तैयारी 2020 में गलवान घाटी में हुए संघर्ष के बाद, भारत ने अपने सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे को मजबूत किया है और नए हथियारों और तकनीकों को शामिल किया है। भारत ने 36 राफेल लड़ाकू विमानों की खरीद के साथ अपनी वायुसेना को भी आधुनिक बनाया।
- सामरिक साझेदारी भारत ने अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड (QUAD) गठबंधन को मजबूत किया, जिसका मुख्य उद्देश्य इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में चीन के प्रभाव का सामना करना है। यह सहयोग सैन्य और सामरिक साझेदारियों को बढ़ावा देता है।

पाकिस्तान के साथ सीमा विवाद और आतंकवाद

भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर मुद्दा लंबे समय से तनाव का कारण बना हुआ है। इसके अलावा, पाकिस्तान द्वारा समर्थित आतंकवाद भारत के लिए प्रमुख सुरक्षा चिंता का विषय रहा है।

- आतंकवाद की चुनौती पाकिस्तान द्वारा समर्थित आतंकवादी संगठनों जैसे जैश–ए–मोहम्मद और लश्कर–ए–तैयबा ने भारत में कई बड़े आतंकवादी हमलों को अंजाम दिया है। 2019 में पुलवामा हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान में स्थित आतंकवादी ठिकानों पर बालाकोट हवाई हमला किया, जो भारत की हार्ड पावर का एक स्पष्ट उदाहरण है। इस कार्रवाई से यह स्पष्ट हुआ कि भारत अपने सुरक्षा हितों की रक्षा के लिए सैन्य शक्ति का उपयोग कर सकता है।
- सीमा विवाद भारत और पाकिस्तान के बीच LOC (लाइन ऑफ कंट्रोल) पर लगातार संघर्ष होता रहता है। 2021 में, LOC पर लगभग 5,100 संघर्ष विराम उल्लंघन दर्ज किए गए, जिसके चलते भारत ने सीमा पर अपने सैन्य बलों की तैनाती को बढ़ाया है और अत्याधुनिक हथियारों और निगरानी प्रणालियों का उपयोग किया है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.30

- सुरक्षा तैनाती भारत ने अपने सुरक्षा बलों को आधुनिक हथियारों और ड्रोन तकनीक से लैस किया है। भारतीय सेना ने बॉर्डर सुरक्षा के लिए इजरायल से स्पाइक एंटी–टैंक गाइडेड मिसाइलों और अमेरिका से P&8I निगरानी विमानों का अधिग्रहण किया है, जो सुरक्षा को सुदृढ़ करते हैं।[13]

हार्ड पावर और भारत की सुरक्षा नीतियाँ

भारत ने न केवल चीन और पाकिस्तान जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए अपनी हार्ड पावर पर ध्यान केंद्रित किया है, बल्कि उसने अपनी सामरिक और रक्षा नीतियों में भी सुधार किया है।

- रक्षा क्षेत्र में निवेश भारत ने 2020–21 में अपने रक्षा बजट में लगभग 9.37: की वृद्धि की थी। यह निवेश मुख्य रूप से सैन्य आधुनिकीकरण, तकनीकी उन्नयन और आत्मनिर्भर भारत (Make in India) योजना के तहत घरेलू रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
- नाभिकीय शक्ति भारत के पास रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण नाभिकीय शक्ति है, जो इसके सामरिक सुरक्षा का प्रमुख हिस्सा है। भारत ने अपनी नाभिकीय नीति को नो–फर्स्ट–यूज़ (No First Use) सिद्धांत पर आधारित किया है, लेकिन यह एक शक्तिशाली प्रतिरोधक क्षमता के रूप में काम करता है।[14]

भारत की विदेश नीति में हार्ड पावर की भूमिका महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से चीन और पाकिस्तान के संदर्भ में। जबकि सॉफ्ट पावर ने क्षेत्रीय संबंधों को मजबूत किया है, हार्ड पावर ने भारत को अपनी सुरक्षा और क्षेत्रीय हितों की रक्षा करने में सक्षम बनाया है। सैन्य शक्ति और सुरक्षा नीतियों के माध्यम से भारत ने चीन और पाकिस्तान की चुनौतियों का सामना किया है, जिससे वह अपने राष्ट्रीय हितों को संरक्षित करने में सफल रहा है।

निष्कर्षः–

भारत की दक्षिण एशिया के प्रति विदेश नीति में हार्ड पावर से सॉफ्ट पावर की ओर हुए आमूलचूल परिवर्तन ने भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में महत्वपूर्ण सुधार किया है। इस नीति परिवर्तन के माध्यम से, भारत ने क्षेत्रीय स्थिरता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में सफलता प्राप्त की है। सॉफ्ट पावर, जैसे कि सांस्कृतिक, शैक्षिक, और तकनीकी सहयोग, ने भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ सकारात्मक और सहयोगात्मक संबंध स्थापित करने में मदद की है। इसके परिणामस्वरूप, भारत ने क्षेत्रीय समस्याओं को हल करने और विकासात्मक पहलों को समर्थन देने में प्रमुख भूमिका निभाई है।हालांकि, चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों के साथ सुरक्षा चुनौतियों के मद्देनजर हार्ड पावर का महत्व अभी भी बना हुआ है। भारत ने अपनी सैन्य शक्ति और सुरक्षा नीतियों को बनाए रखते हुए इन चुनौतियों का सामना किया है, जिससे वह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने में सक्षम रहा है।

अंततः, भारत की वर्तमान विदेश नीति हार्ड पावर और सॉफ्ट पावर के बीच संतुलन बनाए रखने पर आधारित है। इस संतुलन के माध्यम से, भारत अपनी क्षेत्रीय और वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने में सफल हो रहा है, और दक्षिण एशिया में शांति, सहयोग और विकास को प्रोत्साहित कर रहा है।

संदर्भ

1. मुकरजी, दिलीप, "इंडिया एंड माल्डिव्स रू ए न्यू एंड क्लोजर रिलेशनशिप," इनसाइक्लोपेड ऑफ सार्क नेशंस ," वॉल्यूम 7, पब्लिश्ड बाई दीप एंड दीप पब्लिकेशंस, न्यू दिल्ली, 1999, पृ० सं०–184–185
2. दत्त,वी.पी., "दि नेबर्स रू बांग्लादेश एंड नेपाल," इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा., न्यू दिल्ली,1997, पृ० सं०–252– 253
3. चौधरी, अनसुआ व बसु, रे, "सार्क एट क्रॉस रोड्स रू दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग का भाग्य", शिवम ऑफसेट प्रेस, नई दिल्ली, 2000, पृ० सं०–42
4. भट्ट ,चंद्र डी, "दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण और शांतिरू एक विश्लेषण, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस", 2010, पृ० सं०–15–16
5. दाश, किशोर सी., दक्षिण एशिया में क्षेत्रवाद, रूटलेज पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क, 2008
6. रंजन, अमित, "भारत की दक्षिण एशिया नीतिः परिवर्तन एवं निरंतरता", द राउंड टेबल जर्नल, वॉल्यूम–108, संख्या–3, 2010 पृ० सं०–259–274
7. कयानी ए.एस., ए.के., कैसर आर.,दक्षिण एशिया में सॉफ्ट पावर का तुलनात्मक अध्ययनरू भारत और पाकिस्तान", जर्नल ऑफ कंटेम्परेरी स्टडीज,2017;6 (1) रू 4–5
8. https://g.co/kgs/MfhtDPN
9. https://g.co/kgs/oEZ9Kqjhttps://journals.sagepub.com/doi/full/10.1177/0971523121998027
10. https://g.co/kgs/KFLKn4G
11. https://g.co/kgs/PcTiXhm
12. पटनायक, स्मृति, "भारत का पड़ोसी प्रथम नीति", द राउंड टेबल जर्नल, 2022, वॉल्यूम–111, पृ० सं०–19
13. https://g.co/kgs/PcTiXhm
14. https://g.co/kgs/ESccHGt